महिला परिवारों तक प्रौद्योगिकी पहुँच का व्यापक प्रभाव

डॉ. संगीता लढ़ा,
बिजनेस डायरेक्टर, रिवुलिस इरिगेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड

मुझे 2023 में गांधीनगर में महिला सशक्तिकरण के लिए जी20 मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भाग लेने का अवसर मिला, जिसमें इस बात पर प्रकाश डाला गया कि कैसे भारत की जी20 प्रेसीडेंसी ने "महिला विकास" से "महिला नेतृत्व विकास" के दृष्टिकोण में बदलाव को प्रेरित किया है।

जी20 नई दिल्ली नेताओं की घोषणा 2023 'आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ाने', 'लैंगिक डिजिटल विभाजन को पाटने', 'लैंगिक समावेशी जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाने' और 'महिलाओं की खाद्य सुरक्षा, पोषण और कल्याण को सुरक्षित करने' पर केंद्रित है।

चूँकि ग्रामीण भारत में एक बड़ी महिला शक्ति कृषि में लगी हुई है, इसलिए इस क्षेत्र में तकनीकी हस्तक्षेप के बिना उपरोक्त लक्ष्यों या यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र – सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना अकल्पनीय है।

मैं विशेष रूप से इस बात पर एक केस अध्ययन प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक हूँ कि कैसे कृषि में तकनीकी हस्तक्षेप से "आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण में वृद्धि" हुई है। महिला किसानों की न केवल आजीविका स्थिरता के इस विशिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करना है बल्कि महिलाओं की खाद्य सुरक्षा, पोषण और कल्याण को सुरक्षित करना भी है।

झारखंड की छोटी जोत वाली महिला किसानों पर सूक्ष्म सिंचाई के ठोस प्रभाव का अध्ययनः

भौगोलिक क्षेत्रः सूक्ष्म सिंचाई की परियोजना झारखंड के वर्षा आधारित क्षेत्रों में से एक में आरम्भ की गई थी, जिसमें प्राकृतिक वर्षा पर निर्भरता, कम निवेश, कम उत्पादकता, प्रमुख फसल के रूप में धान के साथ एकल फसल, अपर्याप्त सिंचाई सुविधाओं के साथ छोटी और सीमांत भूमि जोत सम्मिलित थी। इस क्षेत्र में गर्मियों के दौरान कुएं सूख जाते हैं, जल स्तर काफी नीचे चला जाता है और गैर–मानसूनी–रबी मौसम के दौरान पंपिंग या फसलों की खेती के लिए मुश्किल से ही पानी उपलब्ध होता है। इसके अलावा इस क्षेत्र में अप्रत्याशित, असामयिक उच्च तीव्रता वाली बारिश, उच्च अपवाह के परिदृश्य के साथ लंबे समय तक शुष्क अवधि, कम पानी के रिसाव से जलभृत पुनर्भरण को प्रभावित करने वाले जल विज्ञान चक्रों में जलवायु परिवर्तन से प्रेरित परिवर्तन से भी कोई अन्तर नहीं पड़ता है।

तकनीकी समाधान - एक गेम चेंजरः

केवल वर्षा आधारित कृषि करने वाले 4000 से अधिक छोटे और सीमांत महिला किसानों को झारखंड राज्य आजीविका मिशन के तहत केवल 1000 वर्ग मीटर पर ड्रिप सिंचाई प्रणाली प्रदान की गई थी। उत्पादकों को सिंचाई और फर्टिगेशन प्रणाली संचालित करने के लिए प्रशिक्षित किया गया और उन्हें आर्थिक लाभों के बारे में बताया गया।

परियोजना का महत्वपूर्ण प्रभावः

ड्रिप सिंचाई ने उत्पादकों को सीमित उपलब्ध पानी के साथ रबी मौसम के दौरान सब्जियों जैसी अतिरिक्त

https://doi.org/10.52151/aet2024481.1713

फसल उगाने में सक्षम बनाया।

रबी मौसम के दौरान अतिरिक्त फसल के साथ–साथ बाजार पहुंच और मूल्य श्रृंखला प्रबंधन से स्वाभाविक रूप से किसानों की आय दोगुनी हो गई।

साल भर फसलों की खेती से महिला किसानों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है जिससे गरीबी उन्मूलन हुआ है।

ड्रिप सिंचाई प्रणालियों ने लंबे समय तक शुष्क अवधि, असामयिक मानसून और मानसून के मौसम के दौरान फसल खोने के जोखिम को संबोधित करते हुए जीवित सिंचाई की सुविधा प्रदान की।

निष्कर्ष और भावी राह

जबकि कृषि में महिलाओं की हिस्सेदारी का राष्ट्रीय औसत 32: है, झारखंड में महिलाओं की हिस्सेदारी 12% से कम है। खेती आधारित स्थायी आय के लिए महिलाओं के उत्थान में ऐसे हस्तक्षेप महत्वपूर्ण सफलता कारक हैं।

महिला किसानों को विविध फसल पैटर्न के लिए प्रोत्साहित करना, सिंचाई प्रौद्योगिकी को सुलभ बनाना, चाहे खेत का आकार कितना भी छोटा क्यों न हो, क्षमता निर्माण, प्रौद्योगिकी के सही मिश्रण का समावेश जो तकनीकी रूप से संचालित करने में सरल हो, आर्थिक रूप से व्यवहार्य हो, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और जल उपयोग दक्षता में वृद्धि के साथ–साथ जमीनी स्तर पर स्थायी महिला उद्यमियों के समुदाय ने एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण का प्रदर्शन किया है। ।

इन सभी उत्पादकों को पॉलीहाउस, नर्सरी के साथ आगे बढ़ाया जा सकता है और उसी कृषि भूमि में सुनिश्चित आर्थिक गतिविधियों की गति उत्पन्न की जा सकती है।

''सुधार, प्रदर्शन, परिवर्तन'' नई पीढ़ी के भारत को आकार देने का नया मंत्र है!! ग्रामीण महिला उत्पादकों की सटीक, डिजिटल–स्मार्ट खेती की दुनिया की कल्पना न केवल खेती के उद्यम को आनंदमय बनाएगी बल्कि आर्थिक रूप से स्वतंत्र उद्यमियों की एक फौज तैयार करेगी।